NAME → DOLLY JAIN

ROLL NO. → 17044529002

COURSE → BA (Hons) SANSKRIT

YEAR → IInd

SEMESTER → IVth

SUBJECT → SANSKRIT METERS AND MUSIC

SUBJECT TEACHER → Dr. KALPANA SHARMA

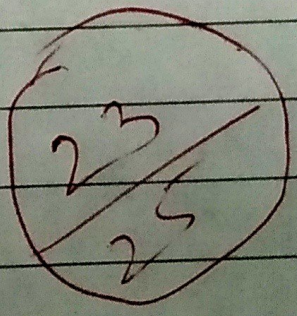

Kalpana

=> वैदिक छंद

→ गायत्री छन्द

गायत्री मंत्र के तीन चरणों में 8-8 अक्षर होते हैं। इसमें कुल २४ अक्षर प्राप्त होते हैं। पिङ्गल ने छन्दसूत्र में कहा है कि 'गायत्री च त्रिपदैव' आठ वसुओं को आठ अक्षरों से व्यक्त किया जाता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र। कहीं-कहीं ह्रस्व अक्षर के चार-पाँच पाद भी गायत्री छन्द में प्राप्त होते हैं। ऋक् प्रातिशाख्य में गायत्री छन्द का लक्षण इस प्रकार है "गायत्री सा चतुर्विंशत्यक्षरा", "अष्टाक्षरास्तपः", "पादाश्चत्वारो वा षडक्षराः"

उदा० अग्निमीळे पुरोहितम = 8
पज्ञस्य देवमृत्विजम = 8
होतारं रत्नधातमम = 8
24

→ उष्णिक छन्द

जब छन्द के पहले और दूसरे चरण में 8-8 अक्षर प्राप्त हो, तीसरे में 12 अक्षर हो तो उष्णिक छन्द होता है। किसी-किसी स्थान पर चार चरण होने के कारण चारों चरण में सात-सात अक्षर होते हैं। "अष्टाविंशत्यक्षरोष्णिक सा पौदर्वतंतेत्रिभि पूर्वापिष्टाक्षरौ पादौ तृतीयो द्वादशाक्षराः"

उदा० वंवस्वे देववीतये = 8
इन्दोधाराभिरोजसा = 8
आकलशम धुमानसोमनः सदः = 12
28

→ अनुष्टुप छन्द

अनुष्टुप छन्द एक ऐसा छन्द है जो वैदिक व लौकिक दोनों में पाया जाता है। जिस छन्द के चारों चरणों में 8-8 अक्षर प्राप्त हो, कुल 32 अक्षर होते हैं, वह अनुष्टुप छन्द होता है।

"द्वात्रिंशदक्षरानुष्टुप पताशोऽष्टाक्षराः समाः"

उदा० ततो विराडजायत = 8
विराजो अधिपुरुषः = 8
संजातो अत्यरिच्यत = 8
पश्चाद् भूमिमथोपुरा = 8
32

→ **बृहती छन्द**

इसके प्रथम चरण मे 12 अक्षर और अन्य में 8 अक्षर होते है।

"चतुष्पदा तु बृहती प्राय: षट् त्रिंशदक्षरा।
अष्टाक्षरास्त्रय: पादास्तृतीयो द्वादशाक्षर:॥"

उदा० इन्द्रं धनस्पे सातपे हवामहे = 12
जैतारमपराजितम = 8
स न: स्वर्षदति द्विष: = 8
स न: स्वर्षदति द्विष: = 8
36

→ **पंक्ति छन्द**

जिस छन्द में पहले और दुसरे चरण में 12 अक्षर और तीसरे और चौथे चरण में 8 अक्षर हो, वह पंक्ति छन्द होता है।

"पङ्क्तिरष्टक्षरा: पञ्च"॥

उदा० उपयामगृहीतोऽसि शण्डायत्वै = 12
षते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्ट = 12
शण्डो देवस्त्वासुक्रपा: = 8
प्रणपन्त्वनाधृष्टाऽसि = 8
40

→ **त्रिष्टुप छन्द**

जिस छन्द के चारों पादों मे 11-11 अक्षर के क्रम से कुल

पप अक्षर प्राप्त हों, उस स्थान पर त्रिष्टुप् छन्द माना जाता है। पिङ्गल ने छन्दसूत्र में कहा है "त्रिष्टुभो रुद्राः"। रुद्र - ५ प्राण (प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान), ५ उपप्राण (नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय), जीवात्मा।

"चतुश्चत्वारिंशत् त्रिष्टुवक्षराणि चतुष्पदा।
एकादशाक्षरैः पादैः।"

उदा० हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे = ११
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत = ११
सदाधारपृथिवीं द्यामुतेमां = ११
कस्मै देवाय हविषा विधेम = ११
४४

→ जगती छन्द

जगती छन्द में १२-१२ अक्षर के क्रम से कुल ४८ अक्षर होते हैं। १२ अक्षरों के लिए १२ सूर्य स्वीकार किए गए हैं। वर्ष के १२ मास इस प्रकार हैं - चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

"जगत्या आदित्याः"

"पञ्चाशत् जगती द्वयूना
चत्वारो द्वादशाक्षराः
तदस्या बहुलंवृत्तम्।"

उदा० हिरण्यपाणि सविताविचर्षणि = १२
उभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते = १२
उपामीवामबाधतेवति सूर्य = १२
अभिकृष्णेनरजसद्यामृणोति = १२
४८

★ वैदिक छन्द अक्षर संख्या और पाद संख्या पर आधारित होते हैं। १-२ अक्षर से कम या अधिक होने पर वैदिक छन्दों की स्थिति में कोई विशेष अंतर नहीं आता।

=> लौकिक छंद

→ भुजङ्गप्रयात छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में ४ यगण हो, उसे भुजङ्गप्रयात कहते हैं। छन्द के पाद के अंत में यति होती है, इसके प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते हैं।

"भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः"

"भुजङ्गप्रयातं यः"

"भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः"

उदा० त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्

→ स्रग्विणी छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में ४ रगण होते हैं, वहाँ स्रग्विणी छन्द होते हैं। छन्द के चरण के अन्त में यति होता है। प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते हैं।

"स्रग्विणी रः"

"रैश्चतुर्भिर्युता स्त्रग्विणी संगता"

"कीर्तितैष चतूरेफिका स्त्रग्विणी"

उदा० अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णं दामोदरं वासुदेवं हरिम्
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे

→ तोटक छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण मे चार सगण होते हैं, उसे तोटक कहते हैं। इसका प्रत्येक चरण में तीसरा, छठा, नौवा, बारहवा अक्षर गुरु होता है।

"तोटकम् सः"

"वद तोटकमब्धि सकारयुतम्"

तोटक छन्द के प्रत्येक चरण मे अंतिम वर्ण गुरु होता है।

उदा० सतंपति विनतुरुदा रमते:
प्रतिगृह्य वचोविससर्ज मुनिम्
तदलब्ध पदं हृदि शोकघने
प्रति यातमिवाऽन्तिकम स्युगुरो

→ विद्युन्माला छन्द

विद्युन्माला छन्द के प्रत्येक पाद मे दो मगण और दो गुरु वर्ण होते हैं। इस छन्द के प्रत्येक पाद में आठ

अक्षर होते हैं।

"म्मोमोगोगोविद्युन्माला"

"विद्युन्मालाम्मौगौ"

उदा० मौनं ध्यानं भूमौ शय्या

गुर्वी तस्या: कामावस्था

मैथ्योत्सङ्गे तृतीयसङ्गा

यस्मिन्काले विद्युन्माला

→ अनुष्टुप छन्द

अनुष्टुप एक समोवृत्त छन्द है इसके चारों चरणों में छठा अक्षर गुरू होता है, पाँचवा अक्षर लघु और दुसरे और चौथे चरण मे सातवा अक्षर लघु होता है और पहले और तीसरे चरण में सातवा गुरू होता है।

"श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं

सर्वत्र लघु पञ्चमम्

द्विचतुष्पादयो: ह्रस्वं

सप्तमं दीर्घमन्ययो:"

उदा० गुणानां वा विशालानां

सत्काराणां च नित्यश:

कर्तार: सुलभाल्लोके

विज्ञातारस्तु दुर्लभा:

→ शिखरिणी छन्द

शिखरिणी छन्द में एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण, अंत में एक लघु और एक गुरु होते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 17 अक्षर प्राप्त होते हैं।

"रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी"

उदा० अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः

→ वसन्ततिलका छन्द

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः एक तगण, एक भगण, दो जगण और दो गुरु वर्ण हो, उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं। इस छन्द में आठ और छः अक्षरों के बाद यति विश्राम किया गया है।

"उक्ता वसन्ततिलका - त - भ - ज - ज - गौ, गः"

"वसन्ततिलका त - भौ - जौ - गौ"

"ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौगः"

उदा० प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति